दीनदयाल जी जिन आदर्शों के लिए पैदा हुए थे उन्हीं को मूर्त रूप देने के लिए उनका राजनीति में प्रवेश हुआ। उन्होंने व्रत लिया–
देश को स्वाधीनता दिलाने, सर्व सम्पन्न बनाने, शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खड़ा करने और सम्पूर्ण समाज में समरसता लाने के लिए जीवनपर्यन्त मनसा, वाचा, कर्मणा अविराम साधना करूंगा।